ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 07 कुल पृष्ठ-8 19 से 25 मई, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853123 सम्वत् 2079 आ.कृ.-04

दयानन्द मठ चम्बा के संस्थापक एवं आर्य समाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी के ८१वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आयोजित त्रिदिवसीय समारोह उत्साह के साथ हुआ सम्पन्न

स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी एवं आचार्य महावीर जी रहे मुख्य वक्ता

दयानन्द मठ चम्बा के संस्थापक, वैदिक विरक्त मण्डल के अध्यक्ष एवं आर्य समाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी के 81वें जन्मदिवस के अवसर पर 3 से 5 मई, 2022 को भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी के अतिरिक्त युवा भजनोपदेशक श्री संदीप आर्य, श्री मधुरम आर्य, स्वामी सोम्यानन्द, स्वामी सूर्यवेश, स्वामी निर्भयानन्द, स्वामी महानन्द, स्वामी आत्मानन्द, स्वामी सुमित्रानन्द आदि संन्यासी सम्मिलित हुए। इस त्रिदिवसीय समारोह में यज्ञ के ब्रह्मा पद को मठ के अध्यक्ष आचार्य महावीर जी ने सुशोभित किया और श्री रमेशचन्द्र शास्त्री ने वेदपाठ एवं यज्ञ की व्यवस्था का दायित्व संभाला। कार्यक्रम में प्रातः 7 से 9 बजे तक यज्ञ तथा 9 से 11 बजे तक प्रवचन एवं व्याख्यानों का कार्यक्रम चलता रहा। इसी प्रकार सायं 5 से 8 बजे तक यज्ञ, प्रवचन एवं भजनों का कार्यक्रम चला। इस पूरे समारोह की व्यवस्था में दयानन्द आदर्श उच्च विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती बृजबाला, उपप्राचार्या श्रीमती करुणा आर्या एवं उनकी अन्य अध्यापिकाओं ने अथक परिश्रम किया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी के ओजस्वी प्रवचन निरन्तर चलते रहे। उनके अतिरिक्त स्वामी आदित्यवेश जी के भी प्रभावशाली व्याख्यान हुए। स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ के वैज्ञानिक महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला और बताया कि यज्ञ हमारे जीवन का आधार है। यज्ञ से पर्यावरण शुद्ध होता है और पर्यावरण से जल, जमीन तथा जंगल की सुरक्षा होती है।

स्वामी आदित्यवेश जी ने स्वामी सुमेधानन्द जी के सम्बन्ध में बोलते हुए कहा कि स्वामी जी आर्य जगत के वीतराग संन्यासी थे। वे सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के अध्यक्ष रहे, वैदिक विरक्त मण्डल के संस्थापक अध्यक्ष वे ही थे। वे बड़े ही सहृदय व्यक्तित्व के धनी थे।

कार्यक्रम में प्रिं. कुन्दनलाल गुप्ता, श्री चतर सिंह सूर्यवंशी, डॉ. अरुण आर्य, श्री सुनील कुमार, श्री मनोज कुमार, श्री सुरेश कुमार, श्री शांता कुमार, श्री गजेन्द्र कुमार, श्रीमती सरस्वती देवी एवं श्रीमती नीतू आर्या, सुश्री चेतना आर्या आदि का विशेष योगदान रहा। स्वामी आर्यवेश जी ने मथुरा से पधारे एक सज्जन को वानप्रस्थ की दीक्षा देकर सत्यमुनि बनाया। यह कार्यक्रम स्वामी सुमेधानन्द जी को समर्पित था और सभी वक्ताओं ने उन्हें अपनी ओर से श्रद्धांजलियाँ अर्पित की। स्वामी आर्यवेश जी के साथ सर्वश्री बिरजानन्द एडवोकेट प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्री धर्मेन्द्र कुमार व श्री अजयपाल आर्य भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए थे।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

संस्कृति के रक्षक व सच्चे इन्सान बनाने की आवश्यकता है

– डॉ० रामनाथ वेदालंकार

मृत्योरहं ब्रह्मचारी यदस्मि निर्याचन् भूतात् पुरुषं यमाय।
तमहं ब्रह्मणा तपसा श्रमेणाऽनयैनं मेखलया सिनामि।।

– अथर्व० ६/१३३/३

मैं आज झोली पसारकर भिक्षा मांगने निकला हूँ। द्वार–द्वार पर जाकर भिक्षा के लिए पुकार लगाऊँगा। अरे, यह क्या, कुछ लोग मेरी ओर ही चले आ रहे हैं। पूछतें– बाब तुम्हें क्या चाहिए? भाइयों, मैं बालकों की भीख मांगता हूँ। एक, दो, तीन, चार, जिसके पास जितने बालक हों, मुझे भिक्षा में दे दो। क्या कहते हो? मैं बालकों का क्या करूंगा? मैं उन्हें अपने आश्रम में ले जाकर मारूंगा, उनका वध करूंगा, उन्हें मृत्यु की भेंद चढ़ाऊंगा। अरे, यह क्या, यह तो भगदड़ मच गई ! बालकों को पकड़ने वाला बाबा आया, बालकों को पकड़ने वाला बाबा आया, यह कहते हुए सब भागे जा रहे हैं। देखते ही देखते सब घरों के किवाड़ बंद हो गए। नगर भर में बिजली की तरह समाचार फैल गया। सबके मुख पर यही चर्चा है। कोई कहता है, ऐसे साधु बहुत से छूटे हुए हैं। कोई कहता है, ये बालकों को पकड़कर बेच देते हैं। बालकों का मांस पकाने वाले कई होटल शहरों में पकड़े गये हैं। जितने मुँह उतनी बातें हैं।

अब मैं क्या करूँ? किसे अपनी बात समझाऊँ? जहां जाता हूँ, लोग डरकर भागते हैं। अच्छा, ये कुछ सयाने लोग खड़े हैं। इनके पास जाता हूँ। क्या है बाबा, क्या चाहिए? यह ले आटा, दाल, चावल, रोटी, कपड़ा, कम्बल। नहीं–नहीं, मुझे इनमें से किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। मैं तो बालकों का भिखारी हूँ, बालक मांगता हूँ। क्या तू बालकों को पकड़कर ले जाता है? नहीं, मैं बालकों को पकड़कर नहीं ले जाता। जो खुशी से अपने बालक देता है, उसके बालकों को अपने साथ ले जाता हूँ। हमने सुना है तू बालकों को ले–जाकर उन्हें मार डालता है? हाँ, तुमने ठीक सुना है। मैं उन बालकों को ले–जाकर मारता हूँ, परन्तु तू उन्हें क्यों मारता हैं? मैं उन्हें मारता हूँ जिन्दा करने के लिए, मार कर फिर नया जन्म देने के लिए। क्या तू कोई जादूगर है? हाँ, मैं जादूगर हूँ, मैंने अपने गुरु से अनोखी जादूगरी सीखी है।

सुनो, मैं तुम्हें अपनी रामकहानी सुनाता हूँ। किसी समय मैं भी अपने माँ–बाप का लाडला आठ वर्ष का बालक था। एक दिन एक ओजस्वी चेहरे वाला बाबा आया, जो अपने आपको 'मृत्यु' कहता था। वह मुझे मेरे माता–पिता से मांगकर ले गया। शहर से दूर कहीं पर जंगल में एकान्त स्थान पर बने हुए अपने आश्रम में ले–जाकर उसने मुझे छोड़ दिया। वहां मेरे जैसे कुछ और भी बालक थे। उन्हें मारने की तैयारियाँ हो रही थीं, तो भी वे प्रसन्न थे। मैं भी उन्हीं में जा मिला। बाबा ने छुरियों से मेरा एक–एक अंग काटा और मुझे अपने पेट के हवाले किया। तीन रातें पेट में पड़ा रहा, परन्तु ये रातें साधारण न थीं, बारह–बारह वर्ष की एक–एक रात थी। छत्तीस वर्ष बाद मेरा नया जन्मू हुआ। अब मैं चौवालीस वर्ष का हो गया था। मैंने देखा कि मैं बिल्कुल बदल गया हूँ। कोई मुझे पहचानता ही नहीं था। फिर बाबा का आदेश हुआ, आगे चलकर यह कार्य तुझे करना होगा। और उन्होंने मुझे अपनी जादूगरी के भेद बताने शुरू कर दिए। आज उन बाबा के स्थान पर मैं बाबा बना घूम रहा हूँ और लोगों से कहता हूँ कि मुझे अपने बालक दो, मैं उन्हें आदमी बना दूंगा।

आप सोचते होंगे पहेली तो वैसी–की–वैसी रही। अच्छा तो मैं आपको और अधिक संदेह में रखना नहीं चाहता, सब रहस्य साफ–साफ बताए देता हूँ। जो बाबा मुझे मेरे माता–पिता से मांगकर ले–गया था वह एक गुरुकुल का आचार्य था। आचार्य का ही वैदिक नाम 'मृत्यु' है, क्योंकि जैसे मृत्यु मनुष्यों को मारकर नया जन्म देता है, वैसे ही आचार्य बालक के अज्ञान को मारकर बालक को नया जन्म देता है। मैंने अभी आपसे कहा था कि बाबा ने मुझे छुरियों से काटकर अपने पेट में रख लिया और छत्तीस वर्ष तक रखे रखा। यह बात भी ठीक है, किन्तु छुरियाँ लोहे की साधारण छुरियाँ नहीं हैं, वे हैं यम–नियमों की छुरियाँ। यम नियमों की छुरियाँ चलाकर आचार्य ने मेरे सब कुसंस्कारों को नष्ट कर दिया, मानो मुझे मार डाला। मारकट पेट में रख लिया। पेट में रखने का भाव ब्रह्मचर्यसूक्त के इस मंत्र से स्पष्ट हो जाता है– **''आचार्य उपनयनमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तस्तं रात्रीस्तिस्त्र उदरे बिभर्ति।''** (अथर्व० ११/५/३)– आचार्य उपनयन संस्कार करके ब्रह्मचारी को अपने गर्भ में धारण करता है, और तीन रात्रि अर्थात् छत्तीस वर्ष तक या जब तक उसका आचार्याधीन गुरुकुलवास पूर्ण नहीं होता, वह उसे अपने गर्भ में धारण किए रहता है। छत्तीस वर्ष बाद आचार्य ने मुझे नया जन्म दिया अर्थात् स्नातक बनाया। फिर उसने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से मेरे अंदर कुछ प्रस्फुटित होने वाले भावी गुणों का बीज देख मुझे अपने पास ही रख लिया और मुझे आचार्यत्व की शिक्षा देनी प्रारम्भ की, या यों कहिए कि उसने मुझे अपनी जादूगरी के भेद बताने शुरू कर दिए। शनैः शनैः मुझे पूर्ण जादूगर हुआ जान मुझ पर अपना भार सौंप कर उसने इस कार्य से संन्यास ले–लिया। इस प्रकार मैं 'मृत्यु' का ब्रह्मचारी हूँ और अब आचार्य कहाता हूँ।

अब मुझ पर भार है कि मैं नगरवासियों से बालकों को मांगने निकलता हूँ। जो कोई मुझे अपना बालक देगा, उसके बालकों को मैं अपने आचार्य की सिखाई हुई पद्धति से मारकर नया जन्म दूंगा। तुमने सुना होगा नवप्रवष्टि बालक को आचार्य मेखला धारण करवाता है, तगड़ी पहनाता है। मैं भी उस बालकों मेखला बाँधूँगा। शायद तुम पूछो कि मेखला बाँधने से क्या होगा? मूँज से या सूत के थोड़े–से धागों से बनी हुई मेखला क्या कर लेगी? मेखला ब्रह्मचर्याश्रम की जान है, वह कटिबद्धता का प्रतीक है। कटिबद्ध होने का या कमर कस लेने का मुहावरा प्राचीन आर्यों के मेखलाधारण से ही चला है। मेखला का व्यवहार यद्यपि आजकल छूट–सा गया है, तो भी मेखला संसार से बिल्कुल लुप्त नहीं हुई है, न हो सकती है। आजकल उसका स्थान कमरपेटी, लंगोट, धोती के कमरबन्ध आदि ने ले लिया है, अतः मेखला बांधकर मैं बालक को कटिबद्ध करूंगा। ब्रह्मचर्याश्रम में जिन बातों के लिए कटिबद्ध रहना आवश्यक है उनमें से मुख्य हैं– ब्रह्म, तप और श्रम। इसलिए मेखला द्वारा मैं अपने पास आए बालकों को ब्रह्म, तप और श्रम से बाँधूँगा। ब्रह्म का अर्थ ज्ञान है, तप का अर्थ नियम–पालन है, और श्रम का अर्थ परिश्रम है। मेखला बांधकर मैं उसे तीन बातों के लिए कटिबद्ध करूंगा। जो बालक मेरे पास आएंगे, वे प्रसन्नतापूर्वक अपनी कटि में मुझसे मेखला बँधवाते हुए कहेंगे– ।

य इमां देवो मेखलामाबबन्ध यः संननाह य उ नो युयोज।
यस्य देवस्य प्रशिषा चरामः स पारमिच्छात् स उ नो विमुञ्चात्।।

अथर्व० ६/१३३/१

जिस आचार्य देव ने हमें मेखला बाँधी है, जिसने हमें कटिबद्ध किया है, जिसने हमें नियम–पालन में नियुक्त किया है, जिस देव के अनुशासन में हम चल रहे हैं वह हमें इस ब्रह्मचर्याश्रम से पार करे, वह हमें स्नातक बनाकर लोककल्याण के लिए बाह्य जगत् में छोड़े।

आहुतासि-अभिहुत, ऋषीणामसि-आयुधम्।
पूर्वा व्रतस्य प्राश्नती, वीरघ्नी भव मेखले।।

अथर्व० ६/१३३/२

हे मेखला, तू आहुति से संस्कृत है, अभिमन्त्रित है। तू ऋषियों का आयुध है। तेरे द्वारा ऋषिजन आलस्य, प्रमाद आदि को मार भगाते हैं। ब्रह्मचर्यव्रत–धारण के पूर्व तू शरीर पर आकर बंधती है। तू हमारे प्रचण्ड से प्रचण्ड काम, क्रोध, आलस्य आदि शत्रुओं को नष्ट करने वाली हो, हमें वीरत्व प्राप्त कराने वाली हो।

श्रद्धाया दुहिता तपसोऽधिजाता स्वस ऋषीणां भूतकृतां बभूव।
सा नो मेखले मतिमाधेहि मेधामथो नो धेहि तप इन्द्रियं च।।

–अथर्व० ६/१३३/४

हे मेखले, तू श्रद्धा की पुत्री है, तू तपरूप पिता की सन्तान है। तू उज्ज्वल भूत का निर्माण करने वाले ऋषियों की बहिन है। वह तू हमें मति दे, मेधा दे, तप दे, इन्द्रियों का सामर्थ्य दे।

यां त्वा पूर्वे भूतकृत ऋषयः परिबेधिरे।
सा त्वं परिष्वजस्व मां दीर्घायुत्वाय मेखले।।

–अथर्व० ६/१३३/५

प्राचीन भूत का निर्माण करने वाले बड़े–बड़े ऋषिजन जिस तुझको अपनी कमर से बाँधते रहे हैं, वह तू हे मेखला, मेरी कटि का आलिंगन कर और मुझे दीर्घायुष्य प्रदान कर

अच्छा, तो अब मेरी कहानी पूरी होती है। अब तो आप लोग मुझसे भयभीत नहीं होंगे? अब तो बालकों को मारने–खाने वाले मुझ बाबा को आप लोग अपने बालक निःसंकोच दे सकेंगे। और, क्या मैं यह आशा भी करूं कि मुझे अपने आश्रम का आवश्यक कार्य छोड़कर बालकों को मांगने के लिए आपके पास आने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, आप लोग स्वयमेव अपने बालकों को लेकर मेरे आश्रम में आएंगे और कहेंगे–

आधत्त पितरो गर्भं कुमारं पुष्करस्त्रजम्।
यथेह पुरुषोऽसत्।।

–यजु० २/३३

हे गुरुजनो ! हम अपने इस प्यारे बालक को कमल–फूलों की माला पहनाकर आपके समीप लाए हैं। आप उपनीत कर इसे अपने गर्भ में धारण कीजिए, जिससे यह आदमी बन जाए।

यज्ञ प्रेमियों के लिये शुभ सूचना

मैं (वेद प्रकाश वानप्रस्थी, आर्य समाज शकरपुर दिल्ली–92) निवेदन कर रहा हूँ कि दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के लिए अपनी ओर से प्रतिदिन समय सायंकाल 3 से 6 बजे तक दिनांक 5 जून, 2022, 'पर्यावरण दिवस' के अवसर पर यज्ञ करने के हेतु दो किलो सामग्री और एक किलो घी दे रहा हूँ।

अतः दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों से प्रार्थना है कि वे डी.–110, आर्य समाज मंदिर, शकरपुर दिल्ली–92 से सामग्री और घी प्राप्त करें।

– वेद प्रकाश वानप्रस्थी (संरक्षक)
आर्य समाज शकरपुर दिल्ली 110092
संपर्क सूत्रः–मो. – 9540942767

सब दिशाओं में हम परस्पर द्वेष न करें (वेद)

– प्रो. चन्द्रप्रकाश आर्य

ऋग्वेद को विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ माना जाता है। अब यूनेस्को ने भी ऋग्वेद को विश्व विरासत में शामिल कर लिया है। वैदिक एवं लौकिक संस्कृत साहित्य में वेद की महिमा भरी पड़ी है। शतपथ ब्राह्मण (11/5/61) कहता है कि धन से परिपूर्ण पृथ्वी का दान करने से जितना फल मिलता है उससे भी अधिक तीनों लोकों से भी अधिक फल वेदों के अध्ययन से मिलता है। इतना ही नहीं, उससे भी बढ़कर अविनाशी, अक्षय ब्रह्म को मनुष्य प्राप्त करता है :-

'यावन्तं ह वै इमां पृथिवीं वित्तेन पूर्णाम् ददत् लोकं जयति त्रिभिस्तावन्तं जयति भूयांस च अक्षय्यं च य एवं विद्वान् अहरहः स्वाध्यायमधीते (शतपथ ब्राह्मण 11/5/61)

मनु. (12/97) कहते हैं कि चारों वर्ण, चारों आश्रम, तीनों लोक, भूत, भविष्यत्, वर्तमान सब कुछ वेद से प्राप्तव्य है, ज्ञातव्य है :-

'भूतं भव्यं भविष्यच्च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति (मनु. 12/97)

आज सारा संसार परस्पर द्वेष, वैर विरोध और हिंसा से भरा पड़ा है। वेद कहता है कि सब दिशाओं में हम किसी से द्वेष न करें और न हमसे कोई द्वेष करे। द्वेष या वैमनस्य ही घर, बाहर, व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक तथा सांसारिक वैर विरोध की जड़ है। परस्पर द्वेष के कारण ही महाभारत का युद्ध हुआ। वर्तमान काल के विश्व युद्धों का मूल भी राष्ट्रों तथा समाजों का परस्पर वैर भाव है। वेद इस बारे में कहता है कि सब दिशाओं में हम किसी से द्वेष न करें और न ही कोई हमसे द्वेष करे। अथर्ववेद (3/27/1-6) के छः मंत्र इस प्रसंग में द्रष्टव्य हैं :-

मंत्र (1) हे पूर्व दिशा के स्वामी। अग्निस्वरूप परमेश्वर। हे जगत् के स्वामी। आप सब भांति हमारी रक्षा करने वाले हैं। हम आपके गुणों को नमस्कार करते हैं। जो कोई हमसे द्वेष करता है और जिससे हम द्वेष करते हैं, उसको/उस द्वेष को हम आपकी न्याय व्यवस्था रूपी मुख में रखते हैं।

मंत्र (2) - हे दक्षिण दिशा के स्वामी इन्द्र। आप तिर्यग् योनियों के, प्राणियों अर्थात कीट, पतंग, बिच्छू आदि टेढ़े चलने वाले एवं दुष्ट प्राणियों से हमारी रक्षा करते हैं। हम आपको पुनः पुनः नमस्कार करते हैं। शेष पूर्ववत् ...।

मंत्र (3) - हे पश्चिम दिशा के स्वामी परमेश्वर। आप बड़े-बड़े अजगर तथा सर्प आदि विषधारियों से तथा अन्य हिंसक प्राणियों से हमारी रक्षा करते हैं। भोज्य पदार्थ एवं औषधियाँ हमारी जीवन रक्षक हैं। शेष पूर्ववत् (हम किसी से द्वेष न करें और न कोई हमसे द्वेष करें, यह सब आपके न्याय पर छोड़ते हैं)

मंत्र (4) - हे शान्ति और आनन्ददायक परमेश्वर। हे उत्तर दिशा के स्वामी। हम आपके इन गुणों के लिए पुनः पुनः नमन करते हैं। जो हमसे द्वेष करता है और जिससे हम द्वेष करते हैं, उसको हम आपके न्याय पर छोड़ते हैं।

मंत्र (5) - हे सर्वव्यापक, परमेश्वर! आप नीचे की दिशा के स्वामी हैं। हम आपके रक्षक एवं जीवनदायक गुणों को नमस्कार करते हैं। शेष पूर्ववत .....।

मंत्र (6) - हे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के स्वामी आप हमारे ऊपर की दिशा के स्वामी हैं। ... हम आपके गुणों के लिए आपको बार-बार नमस्कार करते हैं। शेष पूर्ववत्...।

मंत्र भाग संस्कृत में :-

(1) ओ३म् प्राची दिगग्निरधिपतिः ...

यो अस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।

(2) दक्षिणा दिगिन्द्रोअधिपति .....।

यो अस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।

(3) प्रतीची दिग्वरूणो अधिपतिः ..... शेष पूर्ववत्।।

(4) उदीची दिक् सोमोअधिपतिः ..... शेष पूर्ववत्।।

(5) ध्रुवा दिग् विष्णु रधिपतिः .....शेष पूर्ववत्।।

(6) ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः

तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।

यो अस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।। (अथर्ववेद का. 3/सूक्त 27/मंत्र 1-6)

अथर्ववेद के इन छः मंत्रों में बार-बार दोहराया गया है कि जो कोई हमसे द्वेष करता है और जिस किसी से हम द्वेष करते हैं, उसको, उस द्वेषभाव को हम उस ईश्वर की न्याय व्यवस्था पर छोड़ते हैं। इसी द्वेषभाव के कारण घर-परिवार हिंसा ग्रस्त हैं। परिवार में एक दूसरे की हत्या कर डालते हैं। यह द्वेष/वैरभाव भिन्न-भिन्न प्रकार का हो सकता है। इस प्रकार के हत्याकांडों एवं हिंसात्मक घटनाओं की खबरें अखबारों में छपती रहती हैं। टी. वी./दूरदर्शन पर भी इन घटनाओं की चर्चा होती है। इसलिए ऋग्वेद के संगठन सूक्त (ऋ. 10/191/मंत्र 2-4) में धरती के सब मनुष्यों को एक परिवार मानते हुए कहा गया है :-

'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ...'।

'समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्...'।।

'समानी व आकूती समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। (ऋग्वेद 10/191/2-4)

अर्थात सब साथ चलो। सब मिलकर बोलो। सबके मन एक हों। सबके मन्त्र एक समान हों.... सबके मन, चित्त समान हों। सबके संकल्प या विचार समान हों, सबके हृदय एक दूसरे के समान हों, मन भी एक समान हों।

साथ में वेद यह भी कहता है कि एक दूसरे से, घर बाहर, समाज में द्वेष रहित होकर रहो, परस्पर द्वेष न करो। तुम एक दूसरे से ऐसे प्रेम करो जैसे गाय अपने नवजात बछड़े से प्यार करती है।

सहृदयं सामनस्यम् अविद्वेषं कृणोमि वः।

अन्योअन्यम् अभिहर्यत वत्सं जातमिवाध्न्या।। (अथर्व. 3/30/1)

वेद आगे कहता है कि भाई-भाई के साथ, बहिन-बहिन के साथ तथा भाई बहिन परस्पर द्वेष न करें। आपस में इकट्ठे होकर कल्याणकारी वाणी बोलें :-

'मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा।

सम्यञ्चो सव्रता भूत्वा वाचं वदतु भद्रया।। (अ. 3/30/3)

व्यक्तिगत/पारिवारिक द्वेष/वैरभाव का उदाहरण स्व. रूचिका कांड है जहां रूचिका तथा उसका परिवार 19 साल से हरियाणा के पूर्व डी. जी. पी. राठौर के द्वेष/वैरभाव का शिकार है। दस साल तक उसका मुकदमा दर्ज नहीं होने दिया गया। फिर उसके भाई तथा मां बाप को पीड़ित किया गया। द्वेषभाव/वैरभाव की यह लम्बी दास्तान है। जातीय या सामाजिक विद्वेष का उदाहरण खैरलांजी हत्याकांड है जहां 29 सितम्बर, 2006 को महाराष्ट्र के खैरलांजी गांव में एक दलित परिवार के चार लोगों की हत्या कर दी गई। उनमें से दो माँ बेटी के साथ घृणित सलूक किया गया। उनके साथ बलात्कार किया गया, उन्हें नग्न घुमाया गया फिर हत्या कर दी गई। यह था सामाजिक/जातिगत विद्वेष का परिणाम। बाद में 24 सितम्बर, 2008 को उस हत्याकांड के आरोपी छः व्यक्तियों को मौत की सजा सुनाई गई तथा दो को उम्रकैद दी गई। भारत में दलितों के प्रति सवर्ण जातियों का द्वेषभाव/घृणाभाव अब भी जारी है। 'Centre for Human Rights and Global Justice (Newyork) द्वारा जारी की गई 'भारत के अछूतों के खिलाफ वर्ण भेदभाव' नामक रिपोर्ट में यही कहा गया है। अफ्रीका में रंगभेद के रूप में यह जातीय विद्वेष वर्षों तक चलता रहा। अब भी अमेरिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया में रंगभेद, नस्लवाद, काले-गोरे का भेद के रूप में इस सामाजिक विद्वेष/वैर का स्वरूप सामने आता रहता है। समाचार पत्रों में ऐसी घटनाएं छपती रहती हैं।

ईसा मसीह ने दया, करूणा और प्यार का सन्देश दिया, मोहम्मद साहब ने दुनिया को भाई चारे और इन्सानियत का संदेश दिया किन्तु ईसाइयत और इस्लाम का इतिहास धार्मिक/साम्प्रदायिक विद्वेष एवं वैरभाव से भरा पड़ा है। मजहब और सम्प्रदाय के नाम पर लोगों का खून बहाया गया, निर्दोष लोगों की हत्यायें की गई। वर्तमान में तालिबान धार्मिक विद्वेष/वैरभाव का सबसे बड़ा उदाहरण हैं। दुनिया भर में आतंक, हिंसा और वैरभाव फैला रहे हैं। हजारों लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया है। शायद ही कोई देश या महाद्वीप इनके द्वेष, वैर या हिंसा से बचा हो।

राजनीतिक विद्वेष की बात करें तो वर्तमान में दो विश्व महायुद्ध हो चुके हैं। भारत पाकिस्तान का जब बंटवारा हुआ तो कई लाख लोग पारस्परिक वैर विरोध, हिंसा तथा घृणा का शिकार हुए। अब भी एशिया, अफ्रीका के बहुत से देश परस्पर हिंसा, वैर विरोध का शिकार है।

इस वैरभाव/द्वेषभाव का सबसे बड़ा उदाहरण इजरायल और फिलस्तीन हैं, जहां कभी परस्पर विद्वेष, वैमनस्य, वैरभाव खत्म होने का नाम नहीं लेता। यद्यपि सुयुक्त राष्ट्र संघ ;न्ण्छण्द्ध विश्व में, विभिन्न राष्ट्रों तथा लोगों में शान्ति, भाईचारा, सद्भाव स्थापित करने का प्रयास करता है किन्तु फिर भी राष्ट्रों, में विभिन्न समाजों में परस्पर वैर, विद्वेष एवं हिंसा जारी है।

इसलिए वेद कहता है कि हे देवो! विद्वानों! हमसे द्वेष को दूर करो ताकि हम स्वस्ति (कल्याण) के लिए आगे बढ़ सकें :-

'अपामीवामप विश्वामनाहुतिम् अपारातिं दुर्विदत्रामघायतः।

आरे देवा द्वेषो अस्मद् युतोतनोरू णः शर्म यच्छता स्वस्तये।। (ऋ. 10/63/12)

अर्थात हे देवो। हमसे सब प्रकार के द्वेषों को दूर हटाओ जिससे हम लोग विशाल सुख-साधनों को प्राप्त कर कल्याण मार्ग पर चल सकें। अर्थात सब सुखों को प्राप्त करने के लिए, स्वस्ति (कल्याण) मार्ग पर चलने के लिए द्वेषों से दूर होना या द्वेषों को मिटाना आवश्यक है।

द्वेष चाहे किसी भी प्रकार के हों व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक/साम्प्रदायिक, राजनीतिक या आर्थिक आदि इनको दूर करना आवश्यक है। पशु पक्षी भी परस्पर द्वेष/हिंसा करते हैं। एक दूसरे को मार डालते हैं, मनुष्य को भी खा जाते हैं। शेर, भेड़िया, चीता आदि इसके उदाहरण हैं। इसलिए अथर्ववेद के उपर्युक्त मंत्रों (3/27/1-6) में यह भी कहा गया हे कि हे ईश्वर। आप सब भांति हमारी रक्षा करने वाले हैं। आप तिर्यग् योनियों के प्राणियों अर्थात् कीट, पतंग, बिच्छू आदि टेढ़े चलने वाले प्राणियों से या दुष्ट प्राणियों से हमारी रक्षा करते हैं। हे परमेश्वर/ बड़े-बड़े अजगर तथा सर्प आदि विषधारियों तथा अन्य हिंसक प्राणियों से हमारी रक्षा करते हैं (द्र. मंत्र संख्या 2-3)। इसलिए इन मंत्रों में कहा है कि केवल मनुष्य ही नहीं अन्य पशु पक्षी या हिंसक जीव जन्तु जो भी कोई हमसे द्वेष करता है या हम जिससे द्वेष करते हैं - उस द्वेष को हम आपके ऊपर/आपके न्याय पर छोड़ते हैं।

अब तक तो हुई उनकी बात जो हमसे द्वेष करते हैं, अब उनकी बात करते हैं जिनसे हम द्वेष करते हैं। उन लाखों करोड़ों मूक प्राणियों की, पशु-पक्षियों की जिनकी अकारण हम हिंसा करते हैं। हम अपनी जीभ/स्वाद के लिए लाखों प्राणियों का बध कर रहे हैं। विश्व में अनगिनत मूक प्राणियों को मारा जा रहा है। हमें इनके प्रति भी तो द्वेषभाव त्यागना होगा। वेद केवल एकांगी बात नहीं कहता कि 'यो अस्मान् द्वेष्टि ....' वेद यह भी कहता है कि 'यं वयं द्विष्मः' जिससे/जिस किसी प्राणी से हम द्वेष करते हैं, उस द्वेष को भी हम छोड़ते हैं। वेद में अन्यत्र भी कहा हे कि हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! सब प्रकार के द्वेषभावों को हमसे दूर करो :-

'त्वं नो अग्ने वरूणस्य विद्वान् ...'।

विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा (ऋ. 4-1-4)

सब प्रकार के द्वेष दूर हो जायेंगे तो व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्व सुख एवं शान्ति तथा कल्याण के मार्ग की ओर अग्रसर हो जायेगा जैसा कि उपर ऋग्वेद (10/63/12) के मंत्र में कहा हे - 'आरे देवा द्वेषो अस्मद् युयोतनोरू णः शर्म यच्छता स्वस्तये'।

ये द्वेष विभिन्न प्रकार के द्वेष, सब प्रकार के द्वेष केवल एक स्थान या एक देश या पूरे विश्व भर में ही त्यागने/दूर करने की आवश्यकता नहीं है अपितु समस्त दिशाओं में इन द्वेषों को छोड़ने की आवश्यकता है। इसलिए अथर्ववेद (3/27/1-6) के इन मंत्रों में कहा है कि पूर्व दिशा, पश्चिम दिशा, उत्तर दिशा, दक्षिण दिशा, नीचे की दिशा और ऊपर की दिशा इन सब दिशाओं में हमसे कोई द्वेष न करे और न ही हम किसी से द्वेष करें। 'योअस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः तं वो जम्भे दध्मः' - जो हमसे द्वेष करता है और जिससे किसी भी प्राणी से हम द्वेष करते हैं उसको ईश्वर की न्यायरूपी व्यवस्था पर छोड़ते हैं।

वेद की यह उदात्त भावना देश काल की सीमाओं से परे हैं। समस्त राष्ट्रों तथा विश्व मानव समाज के लिए है। उससे भी उपर समस्त दिशाओं के लिए है। सब प्राणियों के लिए है। जब चारो ओर, सब दिशाओं में कहीं भी द्वेषभाव नहीं होगा, वैर नहीं होगा तो सब ओर शान्ति, प्रेम, खुशहाली एवं सबकी समृद्धि होगी। समस्त धरती का, सब प्राणियों का कल्याण होगा। तभी वेद का यह कथन सार्थक होगा कि हम सब इस धरती मां की संतान हैं - 'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः'।

- 432, सैक्टर-8, करनाल-132001 (हरियाणा)

आर्य समाज शाहजहांपुर, उत्तर प्रदेश का वार्षिकोत्सव भव्यता के साथ सम्पन्न
स्वामी आर्यवेश जी एवं श्री बिरजानन्द जी हुए सम्मिलित

आर्य समाज शाहजहांपुर, उत्तर प्रदेश का वार्षिकोत्सव दिनांक 6 से 8 मई, 2022 तक धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, ब्र. विजयदेव नैष्ठिक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री उदयवीर सिंह चौहान, श्री अनिल दत्त नादान, कन्या गुरुकुल प्रहलादपुर, कासगंज के संस्थापिका डॉ. धारणा याज्ञिकी आदि विद्वान एवं विदुषियाँ सम्मिलित हुए।

अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल और शहीद अशफाक उल्ला खाँ की कर्मस्थली आर्य समाज, टाऊन हाल रोड, शाहजहांपुर सबके लिए आकर्षण का केन्द्र है। क्योंकि इसी आर्य समाज में रहते हुए इन क्रांतिकारियों ने स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपने प्राणों को न्यौछावर किया था। कार्यक्रम में आर्य समाज के अतिरिक्त विभिन्न वक्ताओं तथा उपदेशकों के द्वारा क्रांतिकारियों के जीवन पर कथाएँ सुनाई गई जिसे श्रोताओं ने अत्यन्त पसन्द किया।

बिड़ला शुगर मिल के महाप्रबन्धक श्री मुनेशपाल सिंह जी स्वामी जी के आग्रह पर पधारे और क्रांतिकारियों को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। उन्होंने आर्य समाज के लिए निरन्तर सहयोग देते रहने का आश्वासन भी दिया। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन क्षेत्र के प्रसिद्ध आर्य नेता एवं विद्वान श्री बलवीर सिंह शास्त्री ने किया। उनके अतिरिक्त आर्य समाज के प्रधान श्री जितेन्द्र नाथ जी, मंत्री श्री भुवनेश कुमार, कोषाध्यक्ष श्री वेदपाल सिंह जी तथा आर्य समाज के पूर्व प्रधान श्री नरेन्द्र गुप्ता जी ने उत्सव को सफल बनाने के लिए अथक परिश्रम किया। तीन दिन चले इस उत्सव में यज्ञ की ब्रह्मा विदुषी बहन डॉ. धारणा याज्ञिकी रहीं और कन्या गुरुकुल प्रहलादपुर की ब्रह्मचारिणियों ने वेदपाठ किया। बदायूँ से पधारे वैदिक विद्वान् ब्र. विजयदेव नैष्ठिक के ओजस्वी एवं सारगर्भित व्याख्यानों के अतिरिक्त प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री उदयवीर सिंह आर्य मथुरा, श्री अनिल दत्त नादान के भजनों का भी कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहा।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल तथा उनके क्रांतिकारी शहीद अशफाख उल्ला खाँ, ठाकुर रोशन सिंह, श्री राजेन्द्र लाहिड़ी आदि के संस्मरण सुनाये, वहीं समाज में व्याप्त विविध कुरीतियों के विरुद्ध सप्तक्रांति का आह्वान किया। स्वामी जी ने समाज में बढ़ती हुई नशाखोरी, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, धार्मिक अन्धविश्वास, महिला उत्पीड़न एवं शोषण के विरुद्ध पूरे देश में प्रचण्ड अभियान चलाने के लिए आर्यों को प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि आर्य समाज राष्ट्र का प्रहरी है और उसका यह दायित्व है कि राष्ट्र की जनता को जागरूक बनाने के लिए समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध प्रचार अभियान जारी रखे। स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती की हो रही उपेक्षा को आर्य समाज के लिए एक चुनौती बताया। उन्होंने कहा कि कुछ लोग जानबूझकर ऋषि दयानन्द को पीछे धकेलने की कोशिश कर रहे हैं और उनकी विचारधारा को रोकने के षड्यन्त्र कर रहे हैं। इसके विरुद्ध आर्य समाज को मजबूती के साथ खड़ा होना होगा। भारत सरकार के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा गत् दिनों आधुनिक दार्शनिकों की सूची से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का नाम हटाने के कुप्रयास का उदाहरण देकर स्वामी जी ने बताया कि नये इतिहास लिखे जा रहे हैं, नई शिक्षा नीति तैयार की जा रही है, किन्तु दुःख की बात यह है कि उनमें महर्षि दयानन्द, आर्य समाज एवं वैदिक सिद्धान्तों की घोर उपेक्षा की जा रही है। स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज की ऐतिहासिक भूमिका को आज नजरअंदाज किया जा रहा है। सरकारों द्वारा मनाये जा रहे आजादी के अमृत महोत्सव समारोहों में स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज और आर्य समाज के बलिदानियों की भूमिका, निजाम हैदराबाद के विरुद्ध आर्य समाज के प्रचण्ड आन्दोलन और सैकड़ों आर्यों के बलिदान की चर्चा कोई नहीं कर रहा। इससे बड़े दुःख और कष्ट की क्या बात हो सकती है। किन्तु आर्य समाज के कुछ भोले–भाले कार्यकर्ता और कुछ अति भावुक कार्यकर्ता इन सब बातों को गम्भीरता से न लेकर। सामयिक साम्प्रदायिक एजेण्डे पर अपनी ताकत लगा रहे हैं। वे आर्य समाज और ऋषि दयानन्द की उपेक्षा से आहत नहीं होते। यह बड़ी आश्चर्य की बात है। स्वामी जी ने सम्पूर्ण आर्य जगत से यह अपील की कि हमारे महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और वैदिक सिद्धान्त प्रमुख हैं, न की समय–समय पर उठने वाले वे मुद्दे जो समाज के लिए विशेष महत्त्व नहीं रखते। आर्य समाज शाहजहांपुर के सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं तथा उपदेशकों ने स्वामी जी का जोरदार स्वागत किया और उनके नेतृत्व में अपना विश्वास व्यक्त किया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

ब्र. सहसरपाल आर्य की पूज्या माता बलवीरी देवी का निधन
12 मई, 2022 को शांति यज्ञ में स्वामी आर्यवेश जी हुए सम्मिलित

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय व्यायामाचार्य ब्र. सहसरपाल आर्य की पूज्या माता श्रीमती बलवीरी देवी जी का गत् दिनों अस्वस्थता के कारण निधन हो गया। उनकी आयु लगभग 90 वर्ष थी। पूज्या माता जी की स्मृति में शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन 12 मई, 2022 को उनके ग्राम भौरां कला, जिला–मुजफ्फरनगर, उ. प्र. में आयोजित की गई। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी सत्यवेश जी के अतिरिक्त बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या तथा संयोजक बहन प्रवेश आर्या, आर्य समाज छपरौली के उपप्रधान श्री धर्मेन्द्र कुमार, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कार्यकर्ता श्री अशोक वशिष्ठ एवं श्री विष्णुपाल, योगाचार्य डॉ. रामवीर आर्य हरियाणा, मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. लक्ष्मणदास आर्य, श्री रोहित कुमार, श्री गुलाब सिंह आर्य एवं श्री विजेन्द्र मलिक, श्रीपाल आर्य (खेड़ी पट्टी), श्री वीरपाल आर्य (फुगाना), श्री धर्मेन्द्र कुमार आर्य (भाजू), श्री गौरव टिकैत सुपुत्र चौ. नरेश टिकैत अध्यक्ष भारतीय किसान यूनियन, डॉ. इकबाल सिंह आर्य, श्री ज्योति आर्य ग्राम पंचायत प्रधान श्री राहुल आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे। शांति यज्ञ स्वामी आर्यवेश जी के ब्रह्मत्व में और श्री अंकित शास्त्री के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री नरेन्द्र आर्य धनौरा ने व्यवस्था संभाली। इस यज्ञ में ब्र. सहसरपाल आर्य स्वयं मुख्य यजमान बने।

विदित हो कि पूज्या माता जी के निधन पर दूर–दूर से परिवार के शुभचिन्तकों, सम्बन्धियों आदि ने पहुँचकर परिवारजनों का ढांढस बंधाया। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के पदाधिकारीगण सर्वश्री स्वामी मुक्तिवेश जी, श्री सज्जन सिंह राठी कार्यकारी प्रधान, श्री अजयपाल आर्य उपप्रधान, श्री ऋषिपाल शास्त्री, मा. प्रदीप कुमार, मा. अशोक आर्य, मा. अजीतपाल जी, श्री दलवीर सिंह आर्य, श्री जगदीश कालीरामन, श्री जयवीर आर्य, श्री सोनू आर्य एवं श्री अनिल आर्य गुरुकुल धीरणवास आदि ने भोराकलां पहुंचकर परिवारजनों को सांत्वना दी और पूज्य माता जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।

शांति यज्ञ के उपरान्त अपने संक्षिप्त प्रवचन में स्वामी आर्यवेश जी ने सम्पूर्ण आर्य जगत की ओर से स्वर्गीया माता जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि माता जी एक धर्मपारायणा, सहृदया, प्रसन्नचित रहने वाली देवी थीं। उनका स्नेह एवं आशीर्वाद पूरे परिवार को और हम जैसे सामाजिक कार्याकर्ताओं को भी लम्बे समय तक प्राप्त रहा। स्वामी जी ने बताया कि जब मैं उनसे मिलने आता था तो वे अपने दोनों हाथ सिर पर रखकर बड़े प्रेम से एक वाक्य बोलती थीं – भाई इस बार बहुत दिनों बाद तुम आये हो। माता जी के जाने से निःसंदेह जहां परिवार की अपूर्णीय क्षति हुई है, वहीं समाजिक कार्यकर्ताओं को अपने आशीर्वाद से अनुप्राणित करने वाली माता का भी अवसान हुआ है। स्वामी जी ने कहा कि ईश्वर के इस शाश्वत नियम के समक्ष हमारे समक्ष नतमस्तक होने के सिवाय और कोई विकल्प नहीं है। अतः आज हम सभी लोग और विशेषकर सभी परिजन यह संकल्प लें कि माता जी के संकल्पों को और उनके अधूरे कार्यों को हम पूरा करेंगे, उनके जीवन से हम सदैव प्रेरणा लेते रहेंगे। स्वामी जी ने कहा कि वह एक महान माँ थीं जिन्होंने अपने एक सुयोग्य सुपुत्र को इस रूप में संस्कारित किया कि वह नवयुवक आज आर्य समाज की विचारधारा को समर्पित होकर जीवनदानी के रूप में युवा पीढ़ी में प्रचारित–प्रसारित करने के लिए कृत संकल्प है। उन्होंने ब्र. सहसरपाल आर्य को और अधिक मजबूत संकल्प के साथ कार्य करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के अन्त में ब्र. सहसरपाल ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया। शांति पाठ के बाद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

एस.एस. डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल, अवांखा, दीनानगर, पंजाब में स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी व श्री बिरजानन्द जी का आकस्मिक आगमन

स्कूल के प्रधान श्री अरविन्द मेहता ने किया भव्य स्वागत

6 मई, 2022 को स्थानीय एस.एस. डी.ए.वी. सीनियर सेकेंडरी स्कूल में अध्यक्ष श्री अरविन्द मेहता एवं सचिव मधुर भाषिणी की अध्यक्षता में एक बौद्धिक समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में दिल्ली से पधारे स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी आदित्यवेश जी विशेष रूप से सम्मिलित हुए। प्रिं. सुशील कुमार द्वारा स्वामी आर्यवेश जी का स्वागत किया गया।

इस समारोह में स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि शिक्षक ही सही अर्थों में राष्ट्र निर्माता होते हैं, क्योंकि बच्चों को अपने ज्ञान द्वारा राष्ट्र निर्माण में भूमिका निभाने के संस्कारों से ओत–प्रोत कराते हैं।

मिशन आर्यावर्त के निदेशक स्वामी आदित्यवेश जी ने बच्चों को संस्कारित करने में शिक्षक की भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि संस्कारों के बिना शिक्षा अधूरी होती है। स्वामी जी ने बच्चों में मोबाइल के उपयोग से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में भी बताया।

प्रबन्धक समिति की सचिव श्रीमती मधुर भाषिणी एवं श्री अरविन्द मेहता ने समाज में व्याप्त कुरीतियों पर रोक लगाने के लिए वैदिक विचारधारा को अपने जीवन में अपनाने पर जोर दिया।

इस दौरान बचपन किड्स केयर इण्टर नेशनल की प्रिंसिपल प्रोमिला मन्हास विशेष तौर पर शामिल थीं।

श्री रामचन्द्र ठेकेदार, ग्राम टिटौली, के सन–सिटी रोहतक में नव–निर्मित भवन का गृह–प्रवेश यज्ञ सम्पन्न

यज्ञ का पौरोहित्य आचार्य सोमदेव आर्य ने किया और आशीर्वाद स्वामी आर्यवेश जी ने दिया

ग्राम टिटौली निवासी, प्रसिद्ध समाजसेवी ठेकेदार रामचन्द जी आर्य ने रोहतक के सन–सिटी में भव्य भवन का निर्माण कराकर गत् दिनों गृह–प्रवेश यज्ञ का भव्य आयोजन किया। जिसमें प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य सोमदेव आर्य ने बड़ी विद्वतापूर्ण तरीके से पौरोहित्य का दायित्व संभाला और यज्ञ को सम्पन्न कराया। संस्कार विधि में दी गई सभी क्रियाओं को पूर्ण कराते हुए आचार्य सोमदेव जी ने अपने संक्षिप्त उपदेश में नये घर में रहने वाले सभी सदस्यों को यज्ञ से जुड़े रहने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी तथा स्वामी आदित्यवेश जी भी विशेष रूप से उपस्थित हुए तथा ठेकेदार परिवार को अपनी शुभकामनाएं दी।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में यह कामना भी कि यह नया घर परिवार के लिए सब प्रकार से शुभ एवं सुख–समृद्धि प्रदान करने वाला हो। स्वामी जी ने कहा कि भवन का निर्माण ठेकेदार जी ने मन लगाकर करवाया है। इसका डिजाइन बहुत ही कुशल आर्टिटेक्ट द्वारा बनाया गया लगता है, क्योंकि इतना खुला पार्क, बड़े–बड़े कमरे, हवा और रोशनी को आने–जाने के लिए खिड़की और दरवाजे लगवाये गये हैं। अतः इस सुन्दर भवन की गरिमा को बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है कि भवन में एक छोटी यज्ञशाला का निर्माण अवश्य किया जाना चाहिए। ताकि परिवार के सदस्य उसमें निरन्तर यज्ञ करते रहें और भावी पीढ़ियों को भी इससे प्रेरणा मिलती रहे। गृह–प्रवेश के कार्यक्रम में ग्राम–टिटौली तथा क्षेत्र के अन्य गणमान्य लोग सम्मिलित हुए। यज्ञ के उपरान्त सुन्दर सहभोज की भी व्यवस्था की गई थी। ठेकेदार जी ने सभी का हार्दिक धन्यवाद किया।

आर्य समाज के कर्मठ नेता, शिक्षाविद् एवं हजारों युवाओं को प्रेरित करने वाले प्रो. बलजीत सिंह आर्य का 85वाँ जन्मोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की

प्रसिद्ध आर्य नेता, गुरुकुल कांगड़ी के पूर्व रजिस्ट्रार, आर्य कॉलेज नवांशहर के पूर्व प्रधानाचार्य, जनता इण्टर कॉलेज, बड़ौत के पूर्व प्राध्यापक, प्रसिद्ध समाजसेवी, हजारों युवकों को प्रेरित करके आर्य समाज से जोड़ने वाले प्रो. बलजीत सिंह आर्य जी का 85वाँ जन्मोत्सव गुरुकुल इण्टर नेशनल स्कूल जिमाना के प्रांगण में धूमधाम के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने की। कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, डॉ. अजय सिंह पूर्व विधायक छपरौली, श्री ओमवीर सिंह तोमर पूर्व मंत्री, श्री जितेन्द्र सतवाई विधायक, चौ. साहब सिंह पूर्व मंत्री, श्री मुन्ना सिंह विधायक, श्री कृष्ण चौधरी विधायक, श्री बृजपाल सिंह तेवतिया जिलाध्यक्ष रालोद, चौ. सुखवीर सिंह गठीना अध्यक्ष चौ. चरण सिंह समाज सुधार मंच, श्री परमेन्द्र तोमर प्रधान युवा लोकदल, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त श्री सुभाष पहलवान, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री जय किशोर, प्रिं. राजपाल सिंह, चौ. धर्मपाल सिंह चेयरमैन रमाला, चौ. वीरेन्द्र सिंह पूर्व अध्यक्ष जनता वैदिक कॉलेज बड़ौत, श्री यशवीर सिंह, श्री रोहित जाखड़ राष्ट्रीय प्रवक्ता, श्री प्रमोद धामा, मा. विजय सिंह राठी टिकरी चौगामा, श्री सतवीर सिंह फौजी पूर्व प्रधान सिरसली, श्री विक्रम सिंह निरपुड़ा आदि प्रमुख नेताओं एवं कार्यकर्ताओं ने अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। प्रो. बलजीत सिंह जी के कई पूर्व विद्यार्थियों ने उन्हें शॉल आदि भेंटकर सम्मानित किया। इसी प्रकार गुरुकुल इण्टरनेशनल स्कूल की ओर से प्रिं. डॉ. राजीव खोखर, निदेशक डॉ. अनिल सिंह एवं उनके छोटे भाई श्री सुनील सिंह ने स्मृति चिन्ह एवं शॉल देकर उन्हें सम्मानित किया। कार्यक्रम से पूर्व यज्ञशाला में प्रोफेसर आर्य की दीर्घायुष्य की कामना के लिए यज्ञ किया गया। यज्ञ का दायित्व प्रो. सुरेन्द्रपाल आर्य मवीकलां ने संभाला हुआ था। यज्ञ में जहाँ सैकड़ों लोगों ने आहुति प्रदान की वहीं गुरुकुल इण्टरनेशनल स्कूल की छात्र–छात्राओं ने संकल्प किये।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. आर्य जी के जीवन पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए बताया कि मैं प्रोफेसर आर्य जी को सन् 1970 से जानता हूँ और प्रारम्भ से ही इनके जीवन से और आर्य समाज के प्रति इनकी निष्ठा से मुझे भी प्रेरणा मिलती रही है। प्रोफेसर आर्य जी ने आर्य युवक परिषद् के माध्यम से सैकड़ों शिविरों का आयोजन कराकर हजारों युवकों को प्रेरित किया और आर्य समाज से जोड़ा। अपने अध्यापनकाल के दौरान भी प्रोफेसर आर्य जी ने हजारों विद्यार्थियों को न केवल पढ़ाया बल्कि उन्हें अच्छे संस्कार देकर सही अर्थों में मानव बनने की प्रेरणा दी। आज उनके पढ़ाये हुए हजारों युवक देश–विदेश में बड़े सम्मानित पदों पर कार्य कर रहे हैं। स्वामी जी ने बताया कि आज का समारोह भी उन्हीं पूर्व विद्यार्थियों के संकल्प का परिणाम है और इसको मूर्त रूप देने में जहां चौ. चरण सिंह समाज सुधार मंच की महत्त्वपूर्ण भूमिका है वहीं गुरुकुल इण्टर नेशनल स्कूल के पूरे स्टाप, प्रबन्ध समिति एवं छात्र–छात्राओं का योगदान भी अत्यन्त प्रशंसनीय है। स्वामी जी ने बताया कि प्रोफेसर आर्य, आर्य कॉलेज, पानीपत, हरियाणा तथा आर्य कॉलेज नवांशहर पंजाब में प्रिंसिपल रहे और उसके पश्चात् उन्हें गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार का पद भी सौंपा गया। उनका व्यक्तित्व बड़ा चुम्बकीय है। उनके रग–रग में महर्षि दयानन्द सरस्वती का सामाजिक तथा आध्यात्मिक दर्शन और स्व. चौ. चरण सिंह जी की आर्थिक दर्शन समाया हुआ है। चौ. चरण सिंह और स्वामी दयानन्द जी के विचारधारा के वे एक मिश्रित उदाहरण हैं। स्वामी जी ने प्रोफेसर आर्य जी के उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायुष्य जीवन की कामना करते हुए उपस्थित क्षेत्र के गणमान्य लोगों का आह्वान किया कि वे महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की विचारधारा को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचायें। क्योंकि वर्तमान समय में धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में अन्धविश्वास, पाखण्ड, जातिवाद तथा संकीर्णता तेजी के साथ बढ़ती जा रही है। ऐसे में आर्य समाज जैसी वैश्विक विचारधारा के मंच की आवश्यकता है जो ऊँच–नीच, गैरबराबरी, महिला उत्पीड़न, अन्धविश्वास तथा पाखण्ड आदि के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चला सकता है। स्वामी जी ने कहा कि वर्तमान में सबसे बड़ी चुनौती युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति है। यदि इसे समय रहते नहीं रोका गया तो गरीब जनता और विशेषकर महिलाएँ नशे की आंधी से सर्वाधिक प्रभावित होंगी। आयोजन की सफलता के लिए स्वामी जी ने सभी आगन्तुक वक्ताओं और महानुभावों का धन्यवाद किया।

इस अवसर पर छपरौली के पूर्व विधायक श्री अजय सिंह ने अन्धविश्वास और पाखण्ड को रोकने के लिए आर्य समाज को मजबूत करने की अपील की।

स्वामी आदित्यवेश जी ने प्रो. बलजीत सिंह के जीवन से प्रेरणा लेकर गांव–गांव में आर्य युवक परिषदों की स्थापना करने की अपील की।

श्री ओमवीर तोमर जी ने स्वामी आर्यवेश जी से कहा कि अब वह समय आ गया है जब जल, जमीन, जंगल और पर्यावरण की रक्षा के लिए आर्य समाज के माध्यम से आपको नेतृत्व करना होगा। उन्होंने प्रोफेसर आर्य जी के दीर्घायुष्य की कामना भी की। पूरे मंच का संचालन श्री सुशील वत्स ने किया। अन्त में गुरुकुल इण्टर नेशनल स्कूल के निदेशक डॉ. अनिल सिंह ने सभी महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए भविष्य में भी अपना सहयोग एवं स्नेह बनाये रखने की आशा व्यक्त की। कार्यक्रम के उपरान्त प्रीति भोज में सभी ने भाग लिया।

!!ओ३म्!!

तपोनिष्ठ आर्य संन्यासी, गुरुकुल धीरणवास (हिसार) के संस्थापक

स्वामी सर्वदानंद सरस्वती जी की तृतीय पुण्यतिथि के अवसर पर

3 जून 2022
प्रातः 9 से 12 बजे तक

युवा संकल्प समारोह

अध्यक्षता:- स्वामी आर्यवेश जी, कुलपति गुरुकुल धीरणवास (हिसार)

कार्यक्रम:-

शिविर शुभारंभ:-
30 मई 2022 सायं 5 बजे

3 जून 2022
शांति यज्ञ प्रात: 8 से 9 बजे तक
व्यायाम प्रदर्शन: 9 से 11 बजे तक

युवा चरित्र निर्माण शिविर
30 मई से
3 जून 2022
गुरुकुल धीरणवास

युवा संकल्प समारोह-11 से 12 बजे

सहयोगी संस्था:-सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद
आयोजक:- गुरुकुल धीरणवास,हिसार(हरि.)

स्वामी आदित्यवेश मनीराम गोयल दलबीर आर्य
संपर्क: 9468165946, 9817146902, 8708847583

स्वामी महानन्द जी महाराज का महाप्रयाण

आर्य समाज के कर्मठ संन्यासी स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज द्वारा दीक्षित स्वामी महानन्द जी महाराज का गत् दिनों लम्बी अस्वस्थता के कारण देहावसान हो गया। वे शुक्रताल में अपनी कुटी बनाकर साधना एवं सेवा के कार्य में संलग्न रहते थे। स्वामी महानन्द जी बड़े कुशल संगठनकर्ता एवं व्यवहारिक ज्ञान से ओत–प्रोत व्यक्तित्व के धनी थे। वे अपनी बातों और अपने अनुभवों से किसी भी नये व्यक्ति को क्षण भर में प्रभावित कर लेते थे। शुक्रताल में उनकी अपनी एक अलग पहचान थी। एक स्कूटी के द्वारा दिनभर स्वामी जी शुक्रताल के विभिन्न संस्थानों अथवा मठ मंदिरों में वहां रहने वाले सभी संत, महन्तों एवं लोगों से मिलते रहते थे और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों को संवाद के माध्यम से प्रचारित करते रहते थे। उनके निधन का समाचार सुनकर स्वामी आर्यवेश जी ने उनके पैतृक गांव बिजरौल, जिला–बागपत, उ. प्र. में पहुंचकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामी जी के परिजनों तथा आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने उनकी स्मृति में शांति यज्ञ का आयोजन किया था और जब स्वामी आर्यवेश जी को यह बताया गया कि स्वामी महानन्द जी देहावसान से पूर्व यह कहकर गये थे कि मेरी शांति यज्ञ में स्वामी आर्यवेश जी को अवश्य आमंत्रित करना। वे मेरे विशेष हितैषी हैं। स्वामी जी महाराज के परिजनों के द्वारा स्वामी आर्यवेश जी को सूचित किया गया और स्वामी आर्यवेश जी अपने साथियों के साथ बिजरौल पहुंचकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामी महानन्द जी की अन्तेष्टि शुक्रताल में ही की गई थी। वहां उनकी कुटी पर भी कई दिन तक यज्ञ चलता रहा जिसमें स्वामी सूर्यवेश जी ने यज्ञ की व्यवस्था को कुशलता के साथ संभाला। स्वामी महानन्द जी का देहावासन निःसंदेह आर्य आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति है।

- हमेशा शान्त चित्त तथा हंसमुख रहना सीखें।
- आज का पुरुषार्थ ही कल का भविष्य बनने वाला है।
- अवगुण अपने और गुण दूसरे के देखें।
- तीखे शब्द कमजोर पक्ष की निशानी है।
- अच्छी नसीहत मानना अपनी योग्यता बढ़ाना है।
- मनुष्य इतना बुराई से नहीं डरता जितना बदनामी से।

संस्कृता स्त्री पराशक्तिः ओ३म् संस्कारवान स्त्री परमशक्ति है

कन्याओं एवं युवतियों के लिए स्वर्णिम अवसर

कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

दिनांक : 6 जून (सोमवार) से 12 जून (रविवार), 2022 तक

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, गांव टिटौली, जिला–रोहतक (हरियाणा)

पांच सौ कन्याएँ एवं युवतियाँ भाग लेंगी

शिविर के मुख्य आकर्षण

- राष्ट्रीय भावना, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा परोपकार की शिक्षा दी जायेगी।
- योगासन, प्राणायाम, जूडो–कराटे आदि शारीरिक एवं आत्मरक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- वैदिक विद्वानों व विदुषियों द्वारा संध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान तथा शंका समाधान किया जायेगा।
- चर्चित महिलाओं द्वारा जीवन में सफलता के गुर सिखाए जायेंगे।
- व्यक्तित्व विकास, वक्तृत्व कला एवं आत्म विश्वास के विकास का प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- कन्या भ्रूण हत्या, दहेज आदि सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जागरूक किया जायेगा।
- भोजन की व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क रहेगी।

आवश्यक नियम व निर्देश

- अनुशासन का पालन आवश्यक होगा।
- कोई भी कीमती सामान व मोबाइल अपने साथ न लेकर आयें।
- ऋतु अनुकूल बिस्तर, टार्च, सफेद सूट व नित्य प्रयोग होने वाला सामान साथ लायें।
- इच्छुक छात्राएँ 100 रुपये प्रवेश शुल्क सहित अपना प्रवेश पत्र अपने माता–पिता/अभिभावक द्वारा अनुमोदित कराकर 30 मई तक अवश्य जमा करवाएं। सीटें सीमित होने के कारण विलम्ब से आने वाले आवेदन स्वीकृत नहीं होंगे।

दानी महानुभावों से अपील

इस सात दिवसीय विशाल शिविर के प्रबन्ध एवं भोजन प्रातराश आदि पर लाखों रुपये खर्च होने हैं। आप जैसे दानी महानुभावों के सहयोग से ही इस व्यय की पूर्ति होनी है। अतः आपसे प्रार्थना है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग कराएँ। आप यदि धनराशि के रूप में योगदान देना चाहते हैं तो समस्त क्रास चैक/बैंक ड्राफ्ट 'युवा निर्माण अभियान' अथवा 'महिला समता मंच' के नाम से भिजवाने की कृपा करें। यदि वस्तु रूप में दान देना चाहें तो आप आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइण्ड, दलिया, चीनी, दूध, सब्जी, मसाले आदि सामान भिजवा कर सहयोग कर सकते हैं। आपके द्वारा दिये गये दान से कन्या चरित्र निर्माण रूपी पवित्र यज्ञ सफल होगा तथा आप पुण्य के भागी बनेंगे।

आयोजक

युवा निर्माण अभियान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, महिला समता मंच एवं स्वामी इन्द्रवेश फाउंडेशन

कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)

सम्पर्क नं.:– 9416630916, 9354840454, 01262–286900

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य डॉ. जयेन्द्र जी के पूज्य पिता श्री बलराज सिंह जी की श्रद्धांजलि सभा एवं शांतियज्ञ में स्वामी आर्यवेश जी तथा श्री बिरजानन्द जी ने सम्मिलित होकर श्रद्धांजलि अर्पित की

आर्य समाज के प्रतिष्ठित युवा विद्वान् गुरुकुल नोएडा के विद्वान् डॉ. जयेन्द्र जी के पूज्य पिता स्व. चौ. बलराज सिंह जी के देहावसान पर 9 मई, 2022 को उनके पैतृक गांव–बड़ावत, जिला–बागपत, उ. प्र. में शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी की अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, चौ. साहब सिंह, प्रिं. राजपाल सिंह, श्री मुकेश कुमार, श्रीमती गायत्री मीणा प्रधाना आर्य समाज नोएडा, श्रीमती राज नोएडा आदि ने दिवंगत चौ. बलराज सिंह जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धांजलि सभा से पूर्व दिवंगत आत्मा की शांति के लिए यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें उपस्थित स्त्री–पुरुषों ने आहुतियाँ देकर यज्ञ सम्पन्न कराया। श्रद्धांजलि सभा में श्री वीरेन्द्र सिंह हुड्डा एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सावित्री हुड्डा के अतिरिक्त स्त्री आर्य समाज की महिलाओं ने भी श्रद्धांजलि सभा में सम्मिलित होकर परिवार के प्रति अपनी सांत्वना व्यक्त की।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी का सारगर्भित प्रवचन दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि के रूप में हुआ। उन्होंने कहा कि दिवंगत चौ. बलराज सिंह महर्षि दयानन्द तथा स्व. चौ. चरण सिंह जी के विचारधारा के पक्के अनुयायी थे। उनके भाई स्व. चौ. धर्मपाल सिंह जी से मेरा बहुत पुराना परिचय था और जब आचार्य जयेन्द्र जी गुरुकुल प्रभात आश्रम में सातवीं कक्षा में पढ़ते थे तब से मैं इनकी प्रतिभा और इनकी योग्यता से परिचित हूँ। श्री बलराज सिंह जी को आज इतनी बड़ी संख्या में लोग श्रद्धांजलि देने के लिए एकत्रित हुए हैं इसमें उनके सुयोग्य सुपुत्र डॉ. जयेन्द्र कुमार जी की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि कई बार यह देखने को मिलता है कि माता–पिता की पहचान उनकी योग्य संतान कराती है। उन्होंने अपने बच्चों को संस्कारित एवं शिक्षित किया। जिसके कारण आज इस परिवार में सब प्रकार के सुख–समृद्धि एवं यश–कीर्ति प्राप्त है। उनके जाने से निःसंदेह परिवार को भारी आघात पहुंचा है किन्तु ईश्वरीय नियम को कोई टाल नहीं सकता। जब मनुष्य के भोग पूरे हो जाते हैं तो उसे ये नश्वर देह छोड़ना ही पड़ता है। मृत्यु एक शाश्वत सत्य है। कर्मों का फल ईश्वर के हाथ में है। अतः हम सभी को ईश्वर पर विश्वास एवं मृत्यु की सत्यता को आत्मसात करने की आवश्यकता है। जो व्यक्ति मृत्यु के शाश्वत सत्य को आत्मसात कर लेता है और ईश्वर की व्यवस्था तथा उसके न्याय पर आस्था बना लेता है उसको किसी प्रकार का शोक या दुःख नहीं हो सकता। आज स्व. चौ. बलराज सिंह जी के निधन के उपरान्त परिवार में जो शोक और दुःख का वातावरण है उससे बाहर आने के लिए ईश्वर विश्वास जरूरी है। स्वामी जी ने आर्य जगत की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परिवार का ढांढस बंधाया और उन्हें अपने पूज्य पिता के पद्चिन्हों पर चलते हुए धर्म तथा परोपकार के कार्यों में योगदान देते रहने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के अन्त में डॉ. जयेन्द्र कुमार ने सभी आगन्तुक विद्वानों एवं शुभचिन्तकों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने यह भी कहा कि पूज्य स्वामी आर्यवेश जी का स्नेह एवं आशीर्वाद मुझे बचपन से ही प्राप्त रहा है और वे सदैव हमारे शुभचिन्तक एवं प्रेरणास्रोत रहे हैं। उनके यहाँ आने से हम सभी परिवारजनों को आत्मिक शक्ति मिली है। जयेन्द्र जी के भाई श्री योगेन्द्र जी ने स्वामी जी तथा संस्थाओं का दान व दक्षिणा देकर सम्मान किया।

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल यज्ञशाला एवं आर्य समाज मंदिर, हिम्मतपुर, काकामई, जिला–एटा का भव्य उद्घाटन समारोह सम्पन्न

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आर्य पुरोहित सभा के प्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री के संयोजन में 11 मई, 2022 को आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, तेजस्वी संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, दिल्ली सभा के मंत्री श्री विनय आर्य जी एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के मंत्री श्री सतीश चद्डा, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. वागीश शर्मा एवं गुरुकुल एटा के मुख्य अधिष्ठाता श्री देवराज शास्त्री, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री नरेश दत्त आर्य आदि की गरिममयी उपस्थिति में वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ किया गया विधिवत उद्घाटन

दिनांक 11 मई, 2022 को श्री रामवीर सिंह जी एवं श्री ज्ञानवीर सिंह जी द्वारा आर्य समाज को दान में दी गई भूमि पर नव निर्मित आर्य समाज मंदिर एवं पद्मभूषण महाशय धर्मपाल डॉ. वैदिक यज्ञशाला का उद्घाटन एवं ध्वजारोहण स्वामी आर्यवेश जी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी के कर कमलों से किया गया। इस अवसर पर यज्ञ का सम्पादन आचार्य वागीश जी के ब्रह्मत्व में हुआ और गणमान्य विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किये। मंच का संचालन इस आर्य समाज के सूत्रधार आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी ने किया। इस अवसर दिल्ली से पधारे श्री बृजेश गौतम जी अध्यक्ष संस्कृत शिक्षक संघ, श्री ओम प्रकाश आचार्य, श्री वीरपाल शास्त्री मुम्बई, आचार्य गवेंद्र शास्त्री, श्री देवेंद्र शास्त्री, सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य हेम कुमार शास्त्री जी, श्री नरेन्द्र दत्त जी (बिजनौर), महाशय उदयवीर जी मथुरा आदि ने भाग लिया। समारोह में स्थानीय लोगों में सर्वश्री जयप्रकाश शास्त्री, अंकित शास्त्री, विवेक आर्य, रामगोपाल सिंह, मनवीर सिंह, ब्रजेश कुमार, अतुल कुमार आदि सम्मिलित रहे।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।